उत्तर औपनिवेशिक समय में किसान

संघर्ष के नए प्रश्न

संपादक

डॉ. राम किंकर पाण्डेय

Scanned with CamScanner

अनुक्रम

	अपनी बात	x
	डॉ. राम किंकर पाण्डेय	
1.	साहित्यिक परिदृश्य से गायब होता किसान : प्रश्न सभ्यता के मानक का प्रो. भागवत प्रसाद दुबे	05
2.	स्वातन्त्र्योत्तर भारतीय राजनीति में किसान की जगह डॉ० आरती तिवारी	11
3.	धुरी पर किसान प्रो० मुकुल रंजन गोयल, डॉ० छाया जैन	16
4.	'फाँस'- उत्तर - आधुनिक किसान जीवन का महाकाव्य डॉ० विनोद विश्वकर्मा	20
5.	जनजातीय समाज में ऋणग्रस्तता की समस्या और हिन्दी उपन्यास डॉ. उमेश कुमार पाण्डेय	35
6.	हिन्दी कविता में किसान विमर्श डॉ. पुनीत बिसारिया	43
7.	उदारीकरण एवं भारतीय किसान कु. रजनी सेठिया	51
8.	खेती किसानी का भविष्य और भारतीय किसान डॉ. श्रीमती आस्था तिवारी	61
9.	नगरीय एवं ग्रामीण जीवन की साझा समस्याओं पर एक अन्तर्दृष्टि डॉ. रामभूषण तिवारी	67
10.	किसान जीवन के सामाजिक, सांस्कृतिक पहलू और उनका भोजन छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में डॉ. श्रीमती सरोजबाला श्याग विश्नोई	73
11.	कृषक विमर्श और कथाकार मार्कण्डेय डॉ. मलखान सिंह	80

Scanned with CamScanner

5
जनजातीय समाज में ऋणग्रस्तता की समस्या और हिन्दी उपन्यास

डॉ. उमेश कुमार पाण्डेय

जनजातीय समाज भारतीय संस्कृति का बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है। इतनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत होने के बावजूद न्यायपूर्ण व्यवस्था न होने के कारण आदिवासी समाज विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त है। इन समस्याओं का स्वरूप गंभीर होने के साथ-साथ आदिवासियों के लिए बहुत मारक रहा है। भारत की अधिकांश जनजातियाँ आज भी विभिन्न आर्थिक समस्याओं से ग्रस्त हैं। आर्थिक विघटन और विखंडन लगभग सभी जनजातीय समुदायों में दृष्टिगोचर होता है। कई स्थितियों में इन समस्याओं का रूप बड़ा गंभीर है। अधिकतर जनजातियाँ प्राकृतिक आवास एवं भूमि से बेदखली के भय और काश्तकारी असुरक्षा के माहौल में जी रही हैं। साथ ही, गैर जनजातीय लोगों के साथ संपर्क के फलस्वरूप कर्ज, भूमि हस्तांतरण और भूमिहीनता जैसी समस्याएँ भी पैदा हुई हैं। जमींदार एवं सरकारी अधिकारी भी बेगारी के रूप में इनका शोषण करते रहे हैं। ऋणग्रस्तता की समस्या कदाचित् जनजातियों में पायी जाने वाली सबसे गंभीर समस्या है। हालांकि इस समस्या का संबंध भारत के संपूर्ण सामान्य जनजीवन से है, लेकिन जनजातियों में इसका रूप बहुत अधिक व्यापक और गंभीर है। व्यावहारिक रूप में अधिकांश जनजातियों को इस समस्या का सामना करना पड़ रहा है। जिन जनजातियों की आर्थिक स्थिति कुछ संतोषप्रद है, उनमें भी एक बड़ी संख्या ऋणों के बोझ से दबी हुई है। ध्यान देने की बात है कि

Scanned with CamScanner

युवा आलोचक **डॉ0 रामकिंकर पाण्डेय** ग्रामीण जीवन एवं लोक संवेदना से वैचारिक स्तर पर गहन रूप से जुड़े हुए हैं। इन्होंने **'स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास और भारतीय किसान'** शीर्षक विषय पर प्रो. सेवाराम त्रिपाठी के कुशल मार्गदर्शन में अपना पी–एच.डी. शोध प्रबंध वर्ष 2008 में पूरा किया है जो शीघ्र ही पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित हो रही है। ग्राम कोटवा खास तहसील जवा जिला रीवा म.प्र. में 22 जून 1980 को एक मध्यमवर्गीय किसान परिवार में जन्में डॉ. राम किंकर पाण्डेय ने अपनी प्रारंभिक पढ़ाई गाँव की ही माध्यमिक शाला से पूरी की। माडल स्कूल रीवा से हायर सेकेण्डरी परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय रीवा से हिन्दी विषय में वर्ष 2003 मे महाविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की और जून 2003 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की नेट जे0आर0एफ0 परीक्षा उत्तीर्ण हुए अपने छात्र जीवन से ही प्रखर वक्ता रहे डॉ. राम किंकर पाण्डेय का छात्र राजनीति और छात्र आन्दोलनों से गहरा जुड़ाव रहा है। उज्जैन में प्रति वर्ष आयोजित होने वाले अखिल भारतीय कालिदास समारोह की हिन्दी वाद–विवाद प्रतियोगिता में लगातार तीन वर्षों तक महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया और दो बार विपक्ष के वक्ता के तौर पर विजेता रहे। अजीविका के क्रम में साढ़े चार वर्षों तक जवाहर नवोदय विद्यालय के अन्तर्गत परास्नातक शिक्षक हिन्दी के रूप में पूर्वोत्तर भारत के असम राज्य में सफलता पूर्वक सेवा देते हुए नवोदय विद्यालय समिति से दो बार गुरूश्रेष्ठ का प्रमाण पत्र प्राप्त किया। नवोदय विद्यालय से त्याग पत्र देकर लगभग ढाई वर्षों तक केन्द्रीय विद्यालय संगठन में तमिलनाडु राज्य के नीलगिरि जिले में कार्य किया।

वर्ष 2012 में छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग से सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) के पद पर चयनित होकर वर्तमान में शासकीय लाहिड़ी महाविद्यालय चिरमिरी, जिला – कोरिया (छ0ग0) में कार्यरत हैं। ठेठ देशी ग्रामीण जीवन से गहरा जुड़ाव रखने वाले डॉ. पाण्डेय गाँवों और कृषि की उपेक्षा तथा ग्रामीण जीवन की समरसता तथा सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में आ रही गिरावट के प्रति चिन्ता रखने वाले हैं और गाँवों के चहुँमुखी विकास के प्रबल समर्थक हैं। इनके दर्जनों शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं और एक दर्जन से ज्यादा राष्ट्रीय शोध संगोष्ठियों में ये अपनी महत्वपूर्ण सहभागिता दर्ज करा चुके हैं। दो पुस्तकों 'उत्तर समय में प्रतिरोध के स्वर' और 'हिन्दी साहित्य में किसानः सपने, संघर्ष, चुनौतियाँ और इक्कीसवीं सदी' का सम्पादन कर चुके हैं। वर्तमान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग मध्य क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल द्वारा वित्त पोषित 'कथा साहित्य और आलोचना' शीर्षक से लघु शोध परियोजना पर कार्य कर रहे हैं साथ ही भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान शिमला में तीन वर्षों कमशः 2016, 2017, 2018 के लिए रिसर्च एसोसिएट के रूप में चयनित हुए हैं।

सम्प्रति–सहायक प्राध्यापक हिन्दी, शासकीय लाहिड़ी महाविद्यालय चिरमिरी जिला कोरिया, (छ.ग.)–497449 मोबा. नं. 8109772600, 9425489956
ईमेल–dr.ramkinkerpandey@gmail.com

₹ 895/-

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
वी–508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली–110053
मो. 08527460252, 011–22911223
ईमेल: jtspublications@gmail.com

ISBN 978-93-85833-10-6
9 789385 833106

Scanned with CamScanner